साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 48, नवम्बर(प्रथम) , 2018

महाभारत के युद्ध से पूर्व काल में दलितों पर हो रहे अत्याचारों की दारुणकथा

लेखक: पद्मश्री डॉ. गुणवंतभाई शाह
अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

युधिष्ठिर पूछते हैं: `हे पितामह! यदि कोई क्षत्रिय,वैश्य या शूद्र ब्राह्मणत्व प्राप्त करना चाहे,तो वह किस प्रकार पा सकेगा?' जवाब में बाणशैया पर पौढे हुए पितामहप्राचीन इतिहास का एक उदाहरण उसे सुनाते हैं।

भारत की भव्य संस्कृति की गाथा कुछ गर्व के साथ कहनेवालों को अस्पृश्यता चुभती नहीं है। तथाकथित शूद्र वर्ण के लोगों के साथ होता दुर्व्यवहार देश के लिये शर्मनाक रहा है। गांधीजी के जाने के बाद भी ऐसा दुर्व्यवहार कम होता हुआ नजर आता नहीं है। उना में जो घटित हुआ उससे तो प्रत्येक हिन्दू को शर्म का अनुभव होना चाहिए। भूतकाल में वर्णप्रथा के साथ बुना हुआ `ब्राह्मणाभिमान' तमोगुणी था और उसमें कहीं भी आत्मौप्य नहीं था।

बाणशैया पर लेटे हुए भीष्म पितामह ने राजा युधिष्ठिर को संसारधर्म और राजधर्म समझाये थे। उसका पूरा परिचय शांतिपर्व और अनुशासनपर्व में मिलता है। युधिष्ठिर प्रश्न पूछते गए और भीष्म पितामह उत्तर देते गए। पितामह के दीर्घ जीवन के अंत में प्राप्त हुआ संचित अनुभवविश्व उनके द्वारा धर्मराज युधिष्ठिर को दिये गए जवाबों में प्रकट हुआ था। धर्मराज युधिष्ठिर पुछते हैं,``हे पितामह! यदि कोई क्षत्रिय,वैश्य या शूद्र ब्राह्मणत्व प्राप्त करना चाहे तो वह किस तरह प्राप्त कर सकेगा?'' जवाब में बाणशैया पर लेटे हुए पितामह प्रचीन इतिहास का एक दृष्टांत सुनाते हैं। यह दृष्टांत आज भी अप्रस्तुत नहीं लग रहा।सुनो:

एकबार किसी ब्राह्मण के मतंग नामक पुत्र था। एकबार पिता की आज्ञा से यज्ञकार्य के लिए रथ के साथ गदही और उसके बच्चे को जोड़कर जाने लगा। उस मतंग रथ से जुते बालगर्दभ पर कोड़े से उग्र प्रहार करने लगा। अपने बच्चे पर हो रही कोड़े की मार से गदही ने बहुत दु:ख अनुभव किया। माँ ने अपने प्रिय छौने से कहा:``बेटा! शोक मत कर,क्योंकि इस रथ पर सवार हुआ मनुष्य चांडाल है। ब्राह्मण में ऐसी क्रूरता नहीं होती। ब्राहमण तो सबका मित्र कहलाता है। क्या कोई ब्राह्मण इस प्रकार प्रहार कर सकता है?''

गदही की यह बात सुनकर मतंग तुरंत रथ पर से नीचे उतर गया।उसने माता गदही से पूछा:`हे कल्याणी गर्दभी! तुम मुझे चांडाल क्यों कह रही हो? मेरी माता को किसने भ्रष्ट किया है?' गदही ने जवाब में मतंग को एकदम सच्ची बात बता दी। गदही ने कहा:```हे मतंग! तुम्हारी माता ब्राह्मणी थी,परंतु युवावस्था के कारण वह मदोन्मत्त हुई और उसने शूद्र जाती के एक नापित(नाई) के साथ उसने व्यभिचार किया। इस प्रकार तुम्हारा ब्राह्मणत्व विनष्ट हुआ। इसलिए तुम चांडाल हो।'' गदही की ऐसी बात सुनकर मतंग ने तुरंत रथ को लौटा दिया। मतंग को वापस लौटा देखकर पिता ने पूछा: ``मैंने तुम्हें यज्ञकार्य की सिद्धि के लिए भेजा था। तुम क्यों वापस लौट आए?'' मतंग ने पिता से कहा:`` गर्दभी ने मुझे बताया कि मैं शूद्र से पैदा हुआ हूँ। इस बात से अवगत हुआ हूँ,इसलिए अब मैं बनगमन करूंगा और महान तप करूंगा।''

मतंग को वन में उग्र तप करता हुआ देखकर इन्द्र उसे मिलने के लिए गए और कहा:``तुम तप किस लिए कर रहे हो?'' मतंग ने जवाब देते हुए कहा:``मैं यहाँ से ब्राह्मणत्व प्राप्त किए बिना वापस नहीं लौटूँगा।'' इन्द्र ने मतंग को समझाया:`ब्राह्मणत्व तो सर्व प्राणियों में श्रेष्ठ है।यदि तुम उसे पाने कि इच्छा रखोगे तो,तुम विनष्ट हो जाओगे।चांडाल योनि में जन्मे मनुष्य को वह कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता।(चांडालयोनीजातेन न तत्प्राप्यं कदाचन')

मतंग अपने संकल्प में अडिग रहा। उसने 100 वर्ष पर्यंत एक पैर पर खड़े रहकर उग्र तप किया। इन्द्र ने उसे पुन: समझाया और हठ छोड़ने की सलाह दी।

मतंग अपने तप पर अडिग रहा और उसने और 100 वर्ष तक पैर के अंगूठे पर खड़े रहकर उग्र तप किया।

ऐसे उग्र तप के कारण मतंग का शरीर अत्यंत कमजोर पड गया। मात्र अस्थि-त्वचा ही बचे रह गए। अंतत: वह तपस्वी धरती पर लुढ़क गया। तब देवराज इन्द्र वहाँ पहुँच गए। देवराज इन्द्र ने उसे ब्राह्मणत्व प्राप्त करने की हठ देने के लिए आग्रह किया। अंतत: मतंग ने अपना आग्रह छोड देने के लिए तत्परता दिखायी। मतंग ने देवराज इन्द्र से वरदान मांगा: `हे पुरंदर! मैं अपनी इच्छानुसार रूप धारणकर के विवाह कर सकूँ और ब्राह्मण तथा क्षत्रिय जिसका विरोध नहीं कर सके ऐसी पूजा कर सकूँ,ऐसा वरदान दीजिये।' इन्द्र ने ऐसा वरदान देते हुए कहा:`हे मतंग! तुम छंदोदेव के रूप में विख्यात होंगे और स्त्रियाँ तुम्हारी पूजा करेंगी।'

यह कथा भीष्म और उनसे पूर्व के समय में कितनी मजबूत थी,उसके संकेत के रूप में समझना है। शूद्र वर्ण का मनुष्य चाहे कितना ही उग्र तप करे तब भी ब्राह्मणत्व प्राप्त नहीं कर सकता,ऐसी मानवविरोधी मूल्यप्रथा का वह युग था। इतना तो चौकस कि शूद्रों के साथ हुए अन्याय के विषय में एकलव्य के साथसाथ (नायीपुत्र) चांडाल गिने जाते मतंग को भी याद करना है। महाभारत जैसे महाकाव्य के अभ्यासियों ने भी मतंग के साथ पर्याप्त न्याय नहीं किया है।

राम और कृष्ण को भी प्राप्त नहीं हुई ऐसी मृत्यु भीष्म पितामह को प्राप्त हुई। शांतिपर्व और अनुशासनपर्व के पृष्ठ गिनें, तो महाकाव्य का लगभग चौथा हिस्सा भीष्म पितामह के समझदारीपूर्ण वचनों से समृद्ध है। उपरांत,उनमें आदिपर्व,उद्योगपर्व और भीष्मपर्व तो अलग!

मतंग की कथा हमारे हृदय को खलल पहुंचाये ऐसी है। गांधीयुग में शूद्रों की सहाय करनेवाले कईं ब्राह्मण ऐसा जीवन जिये,कि जिन्होंने सदियों से चले आ रहे अन्य का प्रायश्चित्त किया और पाखाने (संडास) साफ किए। जब और जहां किसी दलित को हैरान-परेशान किया गया,तब मुझे मतंग का स्मरण हो आता है। ऐसा

अत्याचार हो तब RSS के लोगों को सबसे ज्यादा खलल पहुंचनी चाहिए। क्या यह दलित `हिन्दू' नहीं हैं?विचार करना पड़ेगा?

******

परिणाम

अस्पृश्यता का पाप हम
अब तक क्यों मिटा नहीं पाये?
मैं यदि हरिजन होता,तो मालूम नहीं
आज तक तो मैं क्या से क्या कर बैठा होता!
कदाचित मेरी अहिंसा भी डिगमिगा जाती।

*विनोबा

संदर्भ: `विनोबा साथे वांचनयात्रा. संपादक: महेंद्र मेघाणी

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें